International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 339-340

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 339-340
www.allresearchjournal.com
Received: 20-11-2017
Accepted: 25-12-2017

डॉ. सुमन मक्कड़
सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, स्व. प.न.कि.श. राजकीय स्ना. महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुमन मक्कड़
सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, स्व. प.न.कि.श. राजकीय स्ना. महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान, भारत

स्त्री का बदलता स्वरूप

डॉ. सुमन मक्कड़

सारांशः
भूमंडलीकरण समाज में स्त्री नए सिरे से अपने जीवन का मुहावरा करने को आतुर है। स्त्री को तलाश है एक बेहतरीन दुनिया की जहां वह अपने भीतर से पैदा ऊर्जा को नया क्षितिज दिला सके। जहां स्त्री–पुरूष के समान अधिकारों से लैस रूप मनुष्यवादी व्यवस्था कायम रख सके।

कूटशब्दः स्त्री जीवन के नवीन आयाम, आधुनिक नारी, आधुनिकता, नारी–चेतना

प्रस्तावनाः
आज नारी की स्थिति स्वयं को संघर्षशील और कर्त्तव्यनिष्ठ बनाती हुई प्रतीत होती है। नारी के संघर्ष का परिणाम यह है कि नारी का सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों के साथ ही नहीं बल्कि पुरूष से आगे बढ़कर अपनी सेवाएं दे रही है लेकिन व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर उसे छला जा रहा है। पूंजीवादी सामाजिक विधान में नारी को अपनी इज्जत आबरू का सौदा करना पड़ता हैं।

प्रकृति ने स्त्री को जो ताकत दी, जिस के कारण वह नया सृजन कर पाती है, शायद उसी के कारण उस का अंतर्मन शुद्ध और शांत रह पाता है। नारी सम्पूर्ण विश्व में शक्ति का प्रतीक है यह आत्मा की कोमलता और सौंदर्यमयी कलात्मकता का परिचय देती है। नारी पुरानी रूढ़ियों, परम्पराओं, मान्यताओं और वर्जनाओं को तोड़ नयी सृष्टि की रचना करना चाहती है। वह सदियों से दबी कुचली चादर से तंग आ चुकी है या बदलने की कोशिश भी कर रही है। मानव जीवन को पूर्णता देने वाली अपने जीवन की शून्यता को मिटाना चाह रही है।[1]

ऐतिहासिक दृष्टि से संसार की सभी संस्कृतियों में स्त्री का अपना सच्चा सम्मान पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा क्योंकि नारी जीवन के संबंध में जो आचार संहिताएं तैयार की गई वे पुरूष द्वारा स्थापित की गई। प्रकृति ने पुरूष और नारी के बीच जो जैविक अन्तर पैदा किया उस का लाभ सदा मनुष्य ने उठाया और स्त्री को अपने भोग की ही वस्तु माना। इस सृष्टि के विस्तार के लिए स्त्री–पुरूष दोनों की सहयोग आवश्यक था लेकिन प्रजनन की क्षमता प्रकृति ने स्त्री को ही दी। अपनी इसी क्षमता के कारण स्त्री के दायित्व भी पुरूष से भिन्न होते रहे और उसके क्षेत्र भी सीमित होते गये। जीवन के बड़े निर्णयों में स्त्री की भागीदारी को बहुत कम महत्व दिया गया। 1990–2001 दौर में महिला जागरण की धारा पूरी तरह से पश्चिमी विचारों की चपेट में आ गयी। पश्चिमी शिक्षा के प्रवेश से धीरे–धीरे संस्कृति बदलती गई। समाज और परिवार की मूल मान्यताओं में अंतर आने लगा। वैश्विककरण के जरिये पश्चिमी ताकते अपने मुद्दे थोपने में सफल हुई। महिलाओं की देह का व्यापारीकरण का आरम्भ हो गया।[2]

आधुनिक नारी पुरातनता की केचुंली को उतार अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नई दिशा के आयामों को मोड़ रही है। नारी जीवन की विभिन्न दिशाओं और प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति मिली है उसका चहुंमुखी विकास हुआ है। हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के युगीन परिवर्तन ने नारी को सौंदर्य और प्रेम की वादियों से बाहर खींच निकाला है और यथार्थ के कठोर धरातल पर भविष्य निर्माण के लिए खड़ा कर दिया है। पुरूष वर्चस्ववादी सोच को दरकिनार कर महिलाओं ने दुनिया के सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर अपनी कुशलता, योग्यता, परायणता, सदृदयता, मृदुभाषिता, स्नेहशीलता और नेतृत्व का परिचय दिया है।[3]

अर्थप्रधान युग में मानव की दृष्टि इतनी विकृत हो गई कि वह अत्यधिक धनार्जन को अपना लक्ष्य मानता है। मुद्रा प्रधान संस्कृति स्त्री के शोषण को आमंत्रित करती है। सभी वर्गों के लोग नारियों का शोषण अलग–अलग तरीके से कर रहे है यद्यपि उसे धन या परिवार दोनों में से किसी एक को चुनना पड़ता है। यही कारण है कि आज की कामकाजी महिला अत्यधिक शोषित और पीड़ित है।

'पावर–वूमेन' अपनी पारम्परिक जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं पाई है और बाजार के पास नर–नारी के इस सदियों से चले आ रहे श्रम विभाजन को तोड़ने का न कोई औजार है, न कोई इच्छा।[4] राजनीति में अधिकारी मिल जाने के उपरान्त भी नारी अपने अधिकारों से वंचित ही है। असली सत्ता की बागडोर तो पुरूष प्रधान समाज के हाथ में ही है। महिला सशक्तीकरण के स्वर ने नारी को अधिकार सम्पन्न तो बना दिया है फिर भी कही न कहीं उसके दर्द की थाह लेने वालों का पता नहीं चलने की कसक रह जाती है। पुरानी और नयी सदी के किनारों में अपना अस्तित्व खोजने वाली नारी समाधान की प्रतीक्षा में है। यह समाधान आने वाला युग या युग रचना ही दे सकती है।[5]

सन्दर्भः

1. डॉ. हरीश कुमार, भारतीय साहित्य और संस्कृति के विविध आयाम (लेख) डॉ. गिरधारी लाल जयपाल, सामाजिक मूल्य, सरोकार और नारी, जोधपुर : रॉयल पब्लिकेशन, पृ. 109–110.
2. डॉ. संजय कुमार त्यागी, नारी मुक्ति की अवधारणा और रामदरश मिश्र के उपन्यास, पृ. 34.
3. आतिश वी. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श, पृ. 16.
4. राजेन्द्र यादव, प्रभा खेतान : अजय कुमार दुबे, चितृसत्ता के नए रूप, अभय कुमार दुबे, भूमण्डलीकरण का प्रति भूगोल (लेख) पृ. 82
5. डॉ. गिरधारी लाल जयपाल, सामाजिक मूल्य, सरोकार और नारी, पृ. 109–112.